स्वयं सुखबीर स्वामीजी को, **मङ्गलवारः, ७-११-२०२३**

दृष्टानुश्रविकविषयवितृष्णस्य वशीकारसंज्ञा वैराग्यं .. ||

पातंजल योगसूत्र १.१५

अर्थ: दृष्ट और आनुश्रविक विषयों में जब चित्त के अन्दर कोई तृष्णा नहीं उभरती उस अवस्था का [वशीकारसंज्ञा] वशीकारसंज्ञा नाम है, उसी को वैराग्य [वैराग्यं] कहा जाता है।

धातु	सूत्र
रञ्ज रागे (रञ्जँ रागे मित् १९४० - भ्वादिगणः)	भूवादयोधातवः धातोः भावे
रञ्ज घञ्	घञि च भावकरणयो: हलन्त्यम्, उपदेशेऽजनुनासिक इत् लशक्वतद्धिते तस्य लोपः, आदर्शनं लोपः
रज् अ	यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेङ्गम अङ्गस्य अत उपधायाः वृद्धिरादैच स्थानेंतार्तामः
राज् अ	चजोः कु घिण्ण्यतोः स्थानेऽन्तरतमः
राग् अ (राग)	

विराग्स्य भावः प्रादय उपसर्गाः क्रियायोगे विराग ष्यञ्
गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः-

विराग य	कर्मणि च ष: प्रत्ययस्य हलन्त्यम् आर्धधातुके शेषः अतो लोपः तद्धितेष्वचामादेः स्थानेन्तार्तामः
वैराग्य	स्वादि उत्पत्ति:
वैराग्यम्	

वैराग्य वि+ राग से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ राग से विलग होना है। इसका मोटा अर्थ संसार की उन वस्तुओं एवं कर्मों से विरत होना है, जिसमे सामान्य लोग लगे रहते हैं।

यानी वैराग्य का अर्थ होता है राग(आसक्ति) से विरक्त होना, भावनात्मक आकर्षण या आसक्ति का अभाव है।

यदि आपने, आपके परिवार ने और आपके पुत्रों ने उपरोक्त सभी गुणों को यहीं छोड़ दिया है तो इस प्रलाप का कारण क्या है?

क्या यह समाज से प्रतिष्ठा पाने की वही लालसा है जिससे तुम्हें पहले अपने पूर्वजों और कुल पुरोहितों द्वारा सावधान किया गया था, लेकिन अब तुम सांसारिक सुखों के कारण भ्रमित हो गए हो और धर्म का

सार भूल गए हो। या फिर यह गुटबाजी की उसी नीति के जरिए राजनीतिक लाभ उठाने की चाहत है कि आप अपनी लाडली बेटी को जाति के नाम पर उसका शास्त्रोचित एवं राज्यनियम अधिकार होकर भी छीनकर वह सब करने को मजबूर कर रहे हैं जो वह नहीं चाहती।

क्योंकि तर्क के पैमाने पर और आपके परिवार का कुल नाम जो दावे कर रहा है, उसके लिए आप खुद को एक अलग समूह, एक अलग इकाई के रूप में बाहर करने में बहुत गर्व महसूस करते हैं जो अभी भी कुछ भी सटीक नहीं बनाता है, यहां तक कि आपका व्यवहार भी आपके नाम के गुणों का प्रतिनिधित्व नहीं करता है जैसा जो मैंने सुना और समझा है , फिर आप कैसे कह सकते हैं, क्या सही है और क्या गलत है,

या कौन सही है और कौन ग़लत?

शादीशुदा पुरुषों में बुद्धि और विवेक कम होता है। वे केवल अपने परिवार की जरूरतों के बारे में ही सोच सकते हैं। वे उन चीजों के बारे में नहीं सोचते जो साधु, मुनि या यहां तक कि अध्ययनरत शास्त्री भी सोचते हैं। वे दैनिक कर्मचारी हैं, लेकिन उनमें सही बात को सुनने और उसके बारे में निष्पक्ष रूप से सोचने का गुण होना चाहिए ताकि वे पूरी सच्चाई तक पहुंच सकें और सच्चे ज्ञान से वे अच्छे कार्य कर सकें जिससे वे वास्तव में अपने जीवन को समृद्ध बना सकें।

आप अपने परिवार या अपनी बेटी के कल्याण के लिए स्वयं जिम्मेदार हैं और आपको इसे जिम्मेदारी से करने का प्रयास भी करना चाहिए लेकिन आपको इस बात पर गंभीरता से विचार करना चाहिए कि वास्तव में कल्याण का मतलब क्या है।